प्लेटो के साम्यवाद का स्वरूप

प्लेटो का साम्यवाद का रूप आधुनिक साम्यवाद की तरह आर्थिक और सामाजिक न होकर विशुद्ध एवं राजनीतिक है। उसने आर्थिक एवं सामाजिक शोषण की समाप्ति तथा समाज में आर्थिक एवं सामाजिक समानता और न्याय की स्थापना हेतु नहीं बल्कि शासक एवं सैनिक वर्ग के लोगों को भ्रष्टाचार से मुक्त करने तथा उन्हें परिवार एवं सैनिक वर्ग को परिवार तथा सम्पत्ति के मोह से मुक्त करने की व्यवस्था है। उसकी यह व्यवस्था शिक्षा व्यवस्था का पूरक है। नेटलशिप के अनुसार, प्लेटो का शिक्षा साम्यवाद शिक्षा द्वारा निर्मित प्रवृत्तियों को प्रभावकारी बनाने के एक साधन के रूप में है।

प्लेटो का साम्यवाद दो भागों में विभाजित है—

1. सम्पत्ति संबंधी साम्यवाद
2. परिवार संबंधी साम्यवाद

सम्पत्ति संबंधी साम्यवाद

शासक एवं सैनिक वर्ग के संबंध में प्लेटो ने आर्थिक अथवा सम्पत्ति संबंधी जो विचार व्यक्त किया है, वही उसका सम्पत्ति संबंधी साम्यवाद कहा जाता है। इस साम्यवादवाद व्यवस्था में के अन्तर्गत वह अभिभावक वर्ग (शासक तथा सैनिक) के लोगों को सम्पत्ति विहीन कर देता है, उसने अपने प्रसिद्ध कृति 'रिपब्लिक' में कहा गया है कि अ. उनका न अपना कोई घर हो न गोदाम, उन्हें सामान्य भोजनालयों में भोजन करना तथा सिपाहियों की तरह अस्थायी घरों में (समूहों) रहना चाहिए। वे ऐसे नागरिक हैं जिन्हें सोना-चाँदी छूना तक नहीं चाहिए। इसी में उनकी मुक्ति है तथा ऐसे होने पर ही वे राज्य के रक्षक बन सकेंगे।

Scanned with CamScanner

यदि वे कभी भूमि, धन और धन का अर्जन करेंगे, तो वे अन्य नागरिकों के सहायक होने के बजाय, उनसे द्वेष करने लगेंगे; वे नागरिक को तथा नागरिक उनसे घृणा करने लगेंगे। इस तरह वे अपने तथा अपने राष्ट्र के सर्वनाश का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उसकी सम्पत्ति संबंधी साम्यवाद आर्थिक न होकर विशुद्ध रूप से राजनीतिक है। वह समाज में आर्थिक एवं सामाजिक शोषण तथा विषमता की समाप्ति नहीं; अपितु अभिभावक वर्ग को लोभ, मोह और भोग की लालसा से मुक्त करता है; ताकि वे राज्य की एकता, सुदृढ़ता एवं सुव्यवस्था के लिए अपने कर्तव्य का समुचित ढंग से पालन कर सकें। वह त्याग तथा समाजहित के प्रति पूर्णतः समर्पण की व्यवस्था है। सम्पत्ति के बंधन और मोह से मुक्त यह वर्ग समाज कल्याण के कार्यों में रत रहने के लिए प्रेरित होता है।

सम्पत्ति विषयक साम्यवाद का आधार- प्लेटो ने मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनीतिक और व्यावहारिक आधारों अपनी इस व्यवस्था का समर्थन किया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस समर्थन का आधार यह है कि शासक और सैनिक वर्ग के लोग अपने कर्तव्यों का समुचित ढंग से तभी पालन कर सकेंगे, जब वे मोह, इन्द्रिय तृष्णा तथा भोग की लालसा से मुक्त होंगे। शासक वर्ग में विवेक और सैनिक वर्ग में शौर्य बनाये रखने के लिए इनसे मुक्ति की स्थिति आवश्यक है। दार्शनिक दृष्टि से इसके समर्थन का आधार यह है कि शासन का कार्य एक विशेष तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें बाधा पैदा करने वाले तत्वों से शासक को मुक्त होना चाहिए। प्लेटो धन को ऐसा तत्व मानता है, अतः वह शासक वर्ग एवं सैनिक वर्ग की इससे मुक्ति की योजना प्रस्तुत करता है। राजनीतिक दृष्टि से इसके समर्थन का आधार यह है कि शासन सर्वाधिक गुण सम्पन्न व्यक्तियों के हाथ में होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

सम्पत्ति का मोह एवं उसकी लालसा गुणों का अन्त कर देती है। व्यावहारिक दृष्टि से उसके चिंतन का आधार यह है कि राजनीतिक एवं आर्थिक शक्तियों के केन्द्रीकरण से भ्रष्टाचार, स्वार्थ और कुशलता को बढ़ावा मिलता है।

आलोचना

1. यह मानवीय प्रकृति के विपरीत है। प्रत्येक व्यक्ति स्वभावतः सम्पत्ति का आकांक्षी होता है तथा इस आकांक्षा से प्रेरित होकर ही वह पुरुषार्थ करता है। यदि उसे सम्पत्ति से वंचित कर दिया जाएगा, तो वह पुरुषार्थ बंद कर देगा और इस प्रकार समाज का विकास अवरुद्ध हो जाएगा।
2. प्लेटो ने इस योजना का केवल शासक और सैनिक वर्गों पर लागू किया है जबकि उत्पादक वर्ग इससे मुक्त रखा है। ऐसा कर वह समाज को दो अलग वर्गों में विभक्त कर देता है। इससे समाज की एकता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
3. इससे परोपकार और उदारता की भावनाएँ नष्ट हो जायेंगी क्योंकि परोपकार का आधार निजी सम्पत्ति ही है।
4. साम्यवाद राज्य की एकता और प्रगति में सहायक नहीं हो सकता है। यह कार्य भिन्नता से ही हो सकता है।
5. इसमें अति है। यह नगर राज्यों को स्वर्ग बनाने के लिए प्रस्तुत की गयी है। परन्तु ऐसा करने के बजाय यह उन्हें नष्ट कर देगी।
6. यह सामान्य अनुभव के विपरीत है।
7. यद्यपि यह आध्यात्मिक बुराइयों का मौलिक निदान है, तथापि इससे कोई आशानुकूल सफलता नहीं मिल सकती है।
8. यह समाज हित के लिए व्यक्ति हित का बलिदान करती है।

Scanned with CamScanner